अध्याय
05

किस तरह आख़िरकार मैं हिंदी में आया

© JCERT not to be republished

शमशेर बहादुर सिंह

लेखक – परिचय

1. शमशेर बहादुर सिंह का जन्म 13 जनवरी 1911 को उत्तराखंड के देहरादून में हुआ था।

2. वे आधुनिक हिंदी कविता के प्रमुख कवि हैं। उन्हें नागार्जुन और त्रिलोचन के साथ 'प्रगतिशील त्रयी' में शामिल किया जाता है।

3. अज्ञेय द्वारा सम्पादित 'दूसरा सप्तक' के महत्वपूर्ण कवियों में से एक हैं।

4. नई कविता के कवियों में शमशेर अपनी अनुभूतिपरक अभिव्यक्ति, जटिल विम्ब विधान और प्रयोगधर्मिता के द्वारा अपनी अलग पहचान बनाते दिखते हैं।

5. उनका काव्य-संसार प्रगतिवादी और प्रयोगवादी चेतना के परस्पर अंतर्विरोधों की उपज है।

6. उनके काव्य का प्रमुख गुण अनुभूति की प्रामाणिकता है। यह अनुभूति की सच्चाई ही उन्हें यथार्थपरक अभिव्यक्ति और मानवीय संवेदनाओं का कवि बनाती है।

7. प्रमुख रचनाएँ- कुछ कविताएँ, कुछ और कविताएँ, चूका भी नहीं हूँ मैं, इतने पास अपने, उदिता-अभिव्यक्ति का संघर्ष, बात बोलेगी, काल तुझसे होड़ है मेरी (कविता संग्रह)। प्लाट का मोर्चा (कहानी संग्रह)। दोआब-आलोचनात्मक लेखन।

8. पुरस्कार व सम्मान-साहित्य अकादमी पुरस्कार, मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार, कबीर सम्मान आदि।

9. भाषा की दृष्टि से शमशेर जी ने अनेक प्रयोग किये हैं। उनकी रचनाओं में उर्दू-फारसी के शब्दों की बहुलता है तथा उनकी काव्य-भाषा में चित्रात्मकता, ध्वन्यात्मकता, लयात्मकता और नाद सौन्दर्य अदि गुण देखे जा सकते हैं।

10. इस महान विभूति का निधन 12 मई 1993 को गुजरात के अहमदाबाद में दिल का दौरा पड़ने के कारण हो गया ।

पाठ – परिचय

प्रस्तुत लेख 'किस तरह आखिरकार मैं हिंदी में आया' हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध प्रयोगवादी कवि और लेखक शमशेर बहादुर सिंह द्वारा लिखा गया है। इसमें उन्होंने अपने हिंदी प्रेम तथा जीवन के संघर्षों के साथ-साथ तत्कालीन हिंदी साहित्य के महारथियों यथा- सुमित्रानंदन पन्त, हरिवंश राय बच्चन, और सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की है।

लेखक कहते हैं कि वह जिस स्थिति में थे सीधे उसी स्थिति में बस पकड़कर दिल्ली चले आये। चूँकि पेंटिंग में उनकी रूचि थी इसलिए उकील आर्ट स्कूल की परीक्षा पास कर गये जिसके कारण बिना फीस के उनका नामांकन हो गया। वे करोल बाग से कनाट प्लेस पेंटिंग सीखने के लिए जाते थे। आने-जाने के क्रम में वह कभी-कविता, ड्राइंग आदि बनाते रहते थे। आर्थिक स्थिति उस समय कुछ ठीक नहीं थी तो कुछ पैसे भाई के द्वारा तथा कुछ साइनबोर्ड पर लिख कर गुजारा चलता था।

© JCERT not to be republished

लेखक की पत्नी का असामयिक निधन हो चुका था जिसके कारण वह काफी दुखी रहते थे उसी समय की बात है कि क्लास ख़त्म हो जाने के उपरांत लेखक के चले जाने के बाद पता चलता है कि बच्चन जी उनसे मिलने आये थे और एक नोट उनके लिए छोड़ गये हैं। कुछ समय बाद लेखक कम्पाउंड्री सीखने के लिए देहरादून चले जाते हैं। पर उनका मन इस कार्य में नहीं लगता। इसी उदासी में वह एक सानेट की रचना करते हैं और बच्चन जी को वह रचना भेज देते हैं।

लेखक कहते हैं कि बच्चन जी की कृपादृष्टि उनपर सदैव रही। लेखक को आगे की पढ़ाई के लिए वह सदैव प्रेरित किया करते थे। बच्चन जो स्वयं पत्नी के देहांत से दुखी रहते थे। इस पीडा के बाबजूद वह लेखक को इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए करने के लिए विवश करते हैं ताकि लेखक को एक अच्छी नौकरी मिल सके। बच्चन जी के सौजन्य से लेखक को इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दू बोर्डिंग हाउस के कॉमन रूम में एक सीट निःशुल्क मिल जाती है। साथ ही सुमित्रानंदन पंत जी के तरफ से उन्हें इंडियन प्रेस में काम भी मिल जाता है। अब लेखक ने हिंदी को गंभीरता से लेना शुरू कर दिया। लेकिन घर में उर्दू का वातावरण होने के कारण हिंदी में लिखने का अभ्यास छूट चुका था। अतः बच्चन जी ने लेखन में उनकी मदद की। इस समय तक लेखक की कुछ कविताएं 'सरस्वती' और 'चाँद' पत्रिका में छप चुकी थी। 'अभ्युदय' में छपी एक सानेट को बच्चन जी ने काफी पसंद किया था।

लेखक का कहना है यदि मैं हिंदी के प्रति आकर्षित हुआ तो इसमें बच्चन जी के साथ-साथ पंत और निराला जी की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी। बच्चन जी ने उन्हें स्टैन्जा का एक प्रकार बताया तथा उसी को आधार बना कर लेखक ने एक कविता रच डाली। बच्चन जी की 'निशा-निमंत्रण' से वह काफी प्रभावित हुए थे। लेखक की पढ़ाई की असंतोषजनक प्रगति से बच्चन काफी दुखी रहते थे। अब वह अपने साथ लेखक को कवि-सम्मेलनों में साथ ले जाने लगे।

अब धीरे-धीरे लेखक कविता लेखन में प्रवृत्त होने लगे थे। 'सरस्वती' पत्रिका में छपी उनकी एक कविता ने निराला का ध्यान लेखक की ओर खींचा। लेखक' रूपाभ'कार्यालय में प्रशिक्षित होने के उपरांत बनारस के 'हंस' कार्यालय की 'कहानी' शाखा में चले गए। और इस प्रकार से वह हिंदी में धीरे-धीरे रमते चले गए।

लेखक कहते है कि निश्चित रूप से उनको हिंदी में लाने का श्रेय बच्चन जी को जाता है। वह कहते हैं कि बच्चन जी का व्यक्तित्व इतना उदार है कि मैं उनकी प्रशंसा करके उनकी श्रेष्ठता को कम करना नहीं चाहता बल्कि उनके द्वारा प्रशस्त मार्ग का अनुसरण ही उनके प्रति मेरी कृतज्ञता होगी। उनका व्यक्तित्व उनकी रचनाओं से भी श्रेष्ठ है। वैसे सज्जन और प्रतिभाशाली व्यक्ति अन्यत्र दुर्लभ है।

शब्दार्थ:- जुमला - वाक्य, व्यंग्योक्ति। मुख्तसर - संक्षिप्त रूप में। इम्तिहान - परीक्षा। भर्ती - दाखिल। बहमो - गुमान -

© JCERT not to be republished

भ्रम का अनुमान। तरंग - लहर। टीस-सी - वेदना, पीड़ा। चुनाँचे - इसलिए। गजल - उर्दू कविता। शेर - गजल के दो चरण। आकर्षण - खिंचाव। साइनबोर्ड - विज्ञापन दर्शाने वाले बोर्ड। बेकार - रोजगारविहीन। माई वीकनेस - मेरी कमज़ोरी। उद्विग्न - अशांत। देहांत - मृत्यु। बोर होना - ऊब जाना। सहपाठी - साथ में पढ़ने वाला। संलग्न - शामिल। वसीला - ज़रिया, सहारा। कृतज्ञ - उपकार को याद रखने वाला। उपलब्धि - प्राप्ति, मिली हुई।

सॉनेट - यूरोपीय कविता का एक छंद जिसका प्रयोग हिंदी कवियों ने भी किया है। छंदमुक्त - छंदों के बंधन से मुक्त कविता। गोया - मानो। केमिस्ट एवं ड्रगिस्ट - दवाइयाँ एवं रसायन बेचने वाले। महारत - कुशलता।

नुस्खा - इलाज के लिए लिखी गई दवाएँ। एकांत - अकेला। गरज - मतलब। दिलचस्पी - रुचि, शौक। अदब लिहाज - शर्म संकोच। घुट्टी में पड़ना - स्वभाव बन जाना। एकांतिकता - एकाकीपन। अभ्यासी - आदती। खिन्न - परेशान और उदास। सामंजस्य - तालमेल। इत्तिफाक - संयोग। डिस्पेंसरी - दवाखाना। झंझावात - आँधी, तूफ़ान। बाल - बाल बचना - बहुत मुश्किल से बचना। अर्धांगिनी - पत्नी। भावुक - भावना से भरपूर। उत्साह - जोश। संघर्ष - टकराव, स्ट्रगल। निश्छल - छल-कपट रहित, सरल। फौलाद - लोहा, अत्यंत कुशल। बरखा - बरसात। झमाझम - मूसलाधार या बहुत तेज। बराय नाम - नाम के लिए दिखाने को। सटीक - एकदम सही। दो आने - बारह पैसे। बेफिक्र - चिंतामुक्त। लोकल - स्थानीय। गार्जियन - अभिभावक। सूफी नज़्म - सूफी कविता। अर्से - लंबे समय तक। काबिल - योग्य। प्लान - योजना। डिग्री - उपाधि। फारिग - मुक्त। तर्क-वितर्क - बहस। हद - उच्चतम सीमा। पलायन - कहीं अन्यत्र चले जाना। सहज - स्वाभाविक। अनुवाद - एक भाषा से दूसरी भाषा में बदलना या रूपांतरित करना। रब्त - संबंध, रिश्ता। खालिस - शुद्ध। विषयांतर - दूसरे विषयों की ओर जाना। पुनर्संस्कार - दुबारा आदत में डालना।

मतभेद - विचारों का आपस में न मिलना। पछाँही - पश्चिम से संबंधित। साधना - गहन अध्ययन। संस्कार - अच्छी आदतें, गुण। प्रवास - कुछ समय के लिए नए स्थान पर रहना। प्रोत्साहन - उत्साह को बढ़ाना। विरक्त - लगाव न होना। संकीर्ण - तंग, संकरा। सांप्रदायिक - किसी संप्रदाय विशेष को बढ़ावा देने वाला।

प्रश्न अभ्यास

1. वह ऐसी कौन सी बात रही होगी जिसने लेखक को दिल्ली जाने के लिए बाध्य कर दिया ?

उत्तर:- शायद किसी ने लेखक को कोई चुभती बात कह दी हो जिसके कारण लेखक भावनात्मक रूप से आहत हुआ हो या फिर आर्थिक विपन्नता के कारण भी लेखक दिल्ली आने के लिए मजबूर हुए हों ।

© JCERT not to be republished

2. लेखक को अंग्रेजी में कविता लिखने का अफ़सोस क्यों रहा होगा?

उत्तर:- लेखक के घर में शुद्ध उर्दू का वातावरण था। उसने बी.ए. में भी एक विषय के रूप में उर्दू की पढ़ाई की थी। उसे अंग्रेज़ी की कविताओं की रचना का अच्छा ज्ञान न था। लेखक द्वारा लिखा गया एक सॉनेट अंग्रेजी में प्रकाशित हुआ जिसे बच्चन जी ने खालिस सॉनेट बताया। अंग्रेजी भाषा के अनुरूप अच्छी कविता न लिख पाने के कारण लेखक को अंग्रेज़ी में लिखने का अफसोस रहा होगा।

3. अपनी कल्पना से लिखिए कि बच्चन ने लेखक के लिए 'नोट' में क्या लिखा होगा?

उत्तर:- संभव है कि बच्चन जी लेखक से मिलना चाहते थे परंतु लेखक स्टूडियो में नहीं थे। इसलिए बच्चन जी ने उनके लिए एक नोट छोड़ा। लेखक उस नोट को पढ़कर आनंदित हो उठे। यह भी संभव होगा कि बच्चन जी ने लेखक के बारे में कुछ काव्य पंक्तियाँ लिखी हो और साथ ही मिलने की इच्छा व्यक्त की हो।

4. लेखक ने बच्चन के व्यक्तित्व के किन रूपों को उभारा है ?

उत्तर:- बच्चन के बहुआयामी व्यक्तित्व को उभारने का प्रयास लेखक ने इस पाठ में किया है। लेखक के अनुसार बच्चन निश्छल, संवेदनशील, परदुखकातर, और सहृदय व्यक्ति थे। यहाँ तक कि अपने आप को हिंदी में आने का श्रेय भी लेखक बच्चन जी को देते हैं। इस से उनके विलक्षण व्यक्तित्व का पता चलता है ।

5. बच्चन के अतिरिक्त लेखक को अन्य किन लोगों का तथा किस प्रकार का सहयोग मिला।

उत्तर:- बच्चन के अतिरिक्त लेखक को उसके भाई तेजबहादुर, सुमित्रानंदन पन्त, बच्चन के पिताजी और उनके ससुराल पक्ष से सहायता मिली। आर्थिक विपन्नता की स्थिति में उनके भाई कुछ पैसे भेजकर लेखक की मदद किया करते थे। पन्त जी के द्वारा उनको इंडियन प्रेस से अनुवाद का काम मिला तथा इलाहाबाद में अध्ययन के दौरान बच्चन के पिताजी के द्वारा अभिभावक के रूप में भरपूर स्नेह और प्यार मिला। ससुराल पक्ष की तरफ से उनको दवाई के दुकान पर रोजगार मिला। इन सभी के योगदान के द्वारा लेखक को अपनी मंजिल पाने में सुविधा हुई।

6. लेखक के हिंदी लेखन में कदम रखने का क्रमानुसार वर्णन कीजिए।

उत्तर:- प्रस्तुत पाठ के आधार पर 1933 के पूर्व उन्होंने चाँद और सरस्वती पत्रिका से अपने लेखन की विधिवत शुरुआत की। इसमें बच्चन जी ने उनकी काफी सहायता की। 1937 में लेखक ने फिर से लिखना प्रारंभ किया। उन्होंने बच्चन द्वारा सिखाये गये 14 पंक्तियों के छंद में काव्य-रचना की। तदुपरांत 'निशा-निमंत्रण' के अनुकरण कर कविताएँ लिखी। कुछ निबंधों की सृष्टि भी उनके द्वारा की गयी। 'रूपाभ' के कार्यालय

© JCERT not to be republished

में विधिवत प्रशिक्षण लिया और फिर बनारस से प्रकाशित 'हंस' के 'कहानी' शाखा में चले गये। इस प्रकार से निरंतर उनकी साहित्य साधना अनवरत चलती रही ।

7. लेखक ने अपने जीवन में जिन कठिनाइयों को झेला है, उनके बारे में लिखिए।

उत्तर:- लेखक का जीवन संघर्षमय रहा। कम उम्र में ही उनकी धर्मपत्नी का देहांत टी.बी. से हो गया। जिसके कारण वह भीतर से टूट गये। आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण ही लेखक को आजीविका के लिए जगह -जगह भटकना पड़ा। इस प्रकार से लेखक अपने जीवन की तमाम बाधाओं को झेलते हुए साहित्य सृजन में निमग्न रहे।

© JCERT not to be republished

© JCERT
not to be republished

अध्याय
01

दो बैलों की कथा

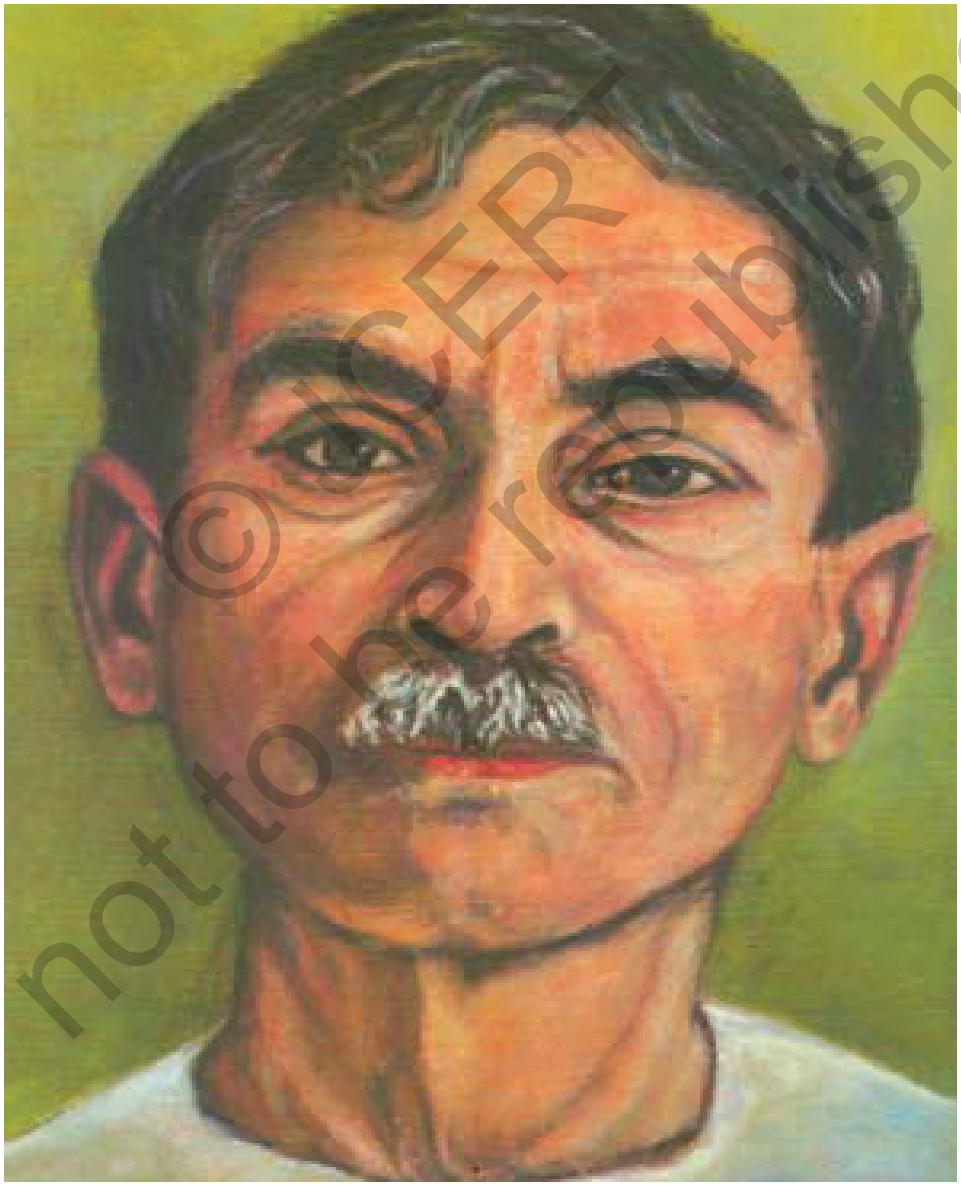

मुंशी प्रेमचंद

© NCERT not to be republished